फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 228

जून 2007

दिल्ली–फरीदाबाद–गुड़गाँव–नोएडा–गाजियाबाद–सोनीपत–बहादुरगढ में फैक्ट्री में काम करते किसी भी मजदूर की ई.एस.आई. नहीं होने का मतलब है कि वह मजदूर सरकार तथा कम्पनी के अनुसार फैक्ट्री में है ही नहीं।

कुछ बातें गुड़गाँव से

मदरसन सुमी सिस्टम्स मजदूर : "प्लॉट 21 सैक्टर-18, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में काम करते 2500 मजदूरों में 100 स्थाई हैं और बाकी सब कैजुअल। यहाँ फैक्ट्री 5 वर्ष से चल रही है और जो 100 स्थाई हैं उन में भी अधिकतर को कम्पनी की नोएडा फैक्ट्री से लाया गया है। फैक्ट्री में 1500 लड़कियाँ और 1000 लड़के काम करते हैं। लड़कों का 6 महीने में ब्रेक कर ही देते हैं, लड़कियों में किसी-किसी का ही ब्रेक करते हैं – अधिकतर लड़कियाँ अविवाहित हैं। दसवीं किये और 18 से 22 वर्ष आयु वालों को ही रखते हैं। 23-24 वर्ष आयु वालों को भी ज्यादा आयु के बता कर भर्ती करने से मना कर देते हैं।

"मदरसन में मजदूरों की 6 से 2, 2 से 10, 10 से 6 बजे की शिफ्ट हैं और सुबह 5½, दोपहर 1½, रात 9½ बजे फैक्ट्री के अन्दर प्रवेश करना पड़ता है। सुबह 6 बजे की शिफ्ट के लिये कम्पनी की बसें बदरपुर बॉर्डर, कापसहेड़ा बॉर्डर, पालम, उत्तम नगर, गुड़गाँव में पहले स्टॉप से सुबह 4-4½ बजे चलती हैं। सुबह की शिफ्ट के लिये कई मजदूरों को रात 3-3½ बजे उठना पड़ता है .... सर्दियों में तो बहुत-ही ज्यादा परेशानी होती है। अन्धेरा-सुनसान में घरवाले लड़कियों को बस स्टॉप तक छोड़ने आते हैं। बी-शिफ्ट रात 10 बजे खत्म होती है और बसें 10½ चलती हैं – रात 11½-12 बजे घरवालों को स्टॉप से लड़कियों को लाना पड़ता है। बसें खचाखच भरी रहती हैं – लड़के तो अक्सर खड़े ही रहते हैं। सी-शिफ्ट में सिर्फ लड़के हैं और कम्पनी पालम, उत्तम नगर तथा बदरपुर बॉर्डर से बसें नहीं चलाती – इन जगहों से मजदूरों को अपने पैसे खर्च कर फैक्ट्री पहुँचना पड़ता है। सी-शिफ्ट में कैन्टीन में भोजन नहीं – रात 12 बजे चाय-बिस्कुट और 3 बजे चाय। नजदीक के सरोल गाँव से काफी मजदूर पैदल तथा साइकिलों से फैक्ट्री पहुँचते हैं।

"शिफ्ट आरम्भ होने के समय से आधा घण्टा पहले फैक्ट्री में पहुँच कर कार्यरत मजदूरों के अगल-बगल में सफाई करनी पड़ती है और फिर 5-10 मिनट एरिया हैल्पिंग हैण्ड की मीटिंग.... मदरसन कम्पनी में उत्पादन, ज्यादा उत्पादन का भारी दबाव है। अधिकतर मजदूरों को खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। उत्पादन हर घण्टे बताना पड़ता है। प्रति घण्टा के हिसाब से 8 घण्टे का उत्पादन कम्पनी निर्धारित करती है – आधा घण्टा भोजन का और दस-दस मिनट दो चाय ब्रेक का समय कम्पनी घटाती नहीं। खींच-खाँच कर, दब-छिपा कर भोजन-चाय के समय की हम पूर्ति करते हैं – कुछ मजदूर तो उत्पादन पूरा करने के चक्कर में भोजन कर ही नहीं पाते। उत्पादन के लिये एरिया हैल्पिंग हैण्ड चिल्लाता-चिल्लाती है। निर्धारित से कम उत्पादन पर सुपरवाइजर डाँटते हैं। और, क्वालिटी वाले कहते हैं कि हमें ज्यादा उत्पादन से मतलब नहीं है, हमें अच्छी गुणवत्ता चाहिये – खराब क्वालिटी बिलकुल नहीं चलेगी! हम मजदूर दोनों तरफ से दबाये जाते हैं।

"मदरसन फैक्ट्री में ओवर टाइम कम ही लगता है और इसका भुगतान दुगुनी दर से है। लड़कियों में ए-शिफ्ट वालियों का ही लगता है, लड़कों का तीनों शिफ्टों में। ओवर टाइम जब लगता है तब 8 घण्टे का लगता है और बहुत ज्यादा थका देता है। रविवार को शिफ्ट बदलती है – ए और सी शिफ्टों में तो नींद पूरी होती ही नहीं। काम करते समय झपकियाँ आती हैं और चोट लगती हैं। मशीनें लड़के ही चलाते हैं और टारगेट, क्वालिटी, नींद के फेर में उँगलियाँ कटती हैं। उँगली कटने पर कम्पनी एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती – कुछ दिन प्रायवेट में इलाज करवा कर निकाल देती है। तनखा से ई.एस.आई. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। और, छुट्टी करने से मजदूरों को रोकने के लिये कम्पनी तीन महीने में एक भी छुट्टी नहीं करने पर 300 रुपये देती है..... 28 मई को ए-शिफ्ट में ड्युटी कर लौटते समय बस में एक लड़की के मुँह से खून आने लगा। ड्राइवर पर दबाव डाल कर मजदूर बस को अस्पताल ले गये और दो लड़के तथा दो लड़की अस्पताल में उस लड़की के साथ रुके....

"मदरसन फैक्ट्री की कैन्टीन में भोजन अच्छा है – 6 रुपये मजदूर और 12 रुपये कम्पनी देती है। शिफ्ट के दौरान कम्पनी दो चाय भी देती है। कैन्टीन के 15 मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे हैं और इन्हें सुबह 7 से रात 9 बजे तक काम करने पर महीने के 2500 रुपये देते हैं। कुछ वरकर रात 12 व 3 बजे चाय भी देते हैं। कैन्टीन वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।

"मदरसन कम्पनी 2400 मजदूरों को हरियाणा सरकार द्वारा अकुशल श्रमिक (हैल्पर) के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन देती है – मशीनें चलाते मजदूरों को भी यही तनखा। हाँ, नौकरी छोड़ने/ब्रेक पर 700 रुपये प्रतिमाह के हिसाब से बोनस राशि दी जाती है। पी.एफ. राशि निकालने का फार्म कम्पनी भर देती है पर तीन महीने से कम समय में छोड़ने वालों के यह फार्म नहीं भरती – ऐसे मजदूरों का पी.एफ. का पैसा पता नहीं कहाँ जाता है।

"मदरसन फैक्ट्री में ग्रुप फोर के सेक्युरिटी गार्ड हैं। भोजन अवकाश के दौरान दो गार्ड कैन्टीन में भी रहते हैं। रात 10½ बजे मजदूरों को छोड़ने जाती बसों में एक-एक गार्ड होता है। और इधर फरीदाबाद में प्लॉट 12 डी सैक्टर-38 में मदरसन कम्पनी की नई फैक्ट्री शुरू हो गई है।"

डेल्फी पैकार्ड इलेक्ट्रिक सिस्टम वरकर : "42 मील पत्थर दिल्ली-जयपुर रोड़, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में कारों का बिजली का ताना-बाना तैयार किया जाता है जिसे यहाँ मारुति, होण्डा, जनरल मोटर फैक्ट्रियों को दिया जाता है तथा अमरीका स्थित निसान की कार फैक्ट्री को निर्यात भी किया जाता है। डेल्फी की नोएडा में फैक्ट्री के संग 1995 में इस फैक्ट्री की स्थापना हुई। गुड़गाँव में उद्योग विहार में डेल्फी की एक छोटी फैक्ट्री और कार्यालय भी हैं। पुणे में नई फैक्ट्री की बातें....

"डेल्फी फैक्ट्री में उत्पादन कार्य के लिये युवा मजदूर भर्ती किये गये और स्थाई किये गये। साल वर्ष में, 2002 में फैक्ट्री में 750 स्थाई मजदूर काम करने लगे थे कि कम्पनी ने 15 महीने की तनखा ले कर इस्तीफा वाली वी आर एस लगाई। हम सब नौजवान थे पर फिर भी 50 मजदूरों ने भी नौकरी नहीं छोड़ी। ऐसे में माँग-पत्र पर यूनियन और कम्पनी में अखाड़ेबाजी हुई। यूनियन ने कहा कि कम्पनी दिवाली उपहार नहीं दे रही, मैनेजमेन्ट ने कहा कि उपहार दे रहे हैं। यूनियन ने कहा कि महिला मजदूरों के साथ मैनेजमेन्ट ने दुर्व्यवहार किया है और कम्पनी ने अनुशासनहीनता का आरोप लगा यूनियन प्रधान को निलम्बित कर दिया। बस उपलब्ध करवाई-बस उपलब्ध नहीं करवाई की जुगलबन्दी में 9 अक्टूबर 02 की रात मजदूर फैक्ट्री के अन्दर रहे। फिर 10 अक्टूबर को यूनियन ने कहा कि मैनेजमेन्ट समझौता वार्ता के लिये तैयार हो गई है इसलिये घर जाओ। हम 11 अक्टूबर को फैक्ट्री पहुँचे तो गेट पर तालाबन्दी का नोटिस पाया। तीन महीने की तालाबन्दी के जरिये मजदूरों को नरम कर *(बाकी पेज तीन पर)*

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

ए बी बी मजदूर : "32 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में बिजली की मोटरें बनाते 150 वरकरों में 35 स्थाई हैं और बाकी को 3 ठेकेदारों के जरिये रखा है। एक ठेकेदार के जरिये रखे 15 मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, 8 घण्टे के 70 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दूसरे ठेकेदार के जरिये रखे 10 मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन, ई.एस.आई., पी.एफ., साप्ताहिक छुट्टी। तीसरे ठेकेदार के जरिये रखे 80 वरकरों को 8 घण्टे के 200 रुपये, ई.एस.आई., पी.एफ., साप्ताहिक छुट्टी, वर्दी-जूते, प्रतिदिन 12 घण्टे की ड्युटी और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

प्रभा उद्योग वरकर : "प्लॉट 43 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में अब लेट्रीन साफ रहती हैं – पहले इतनी गन्दी रहती थी कि फैक्ट्री के बाहर जाना पड़ता था। हम मजदूरों के प्रतिरोध ने इधर सुपरवाइजरों की गालियों को भी लगाम लगा दी है। मार्च तक हैल्पर की तनखा 1800 रुपये थी, अप्रैल से 2000 रुपये कर दी है – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में खारा पानी पीना पड़ता है। भर्ती के समय तनखा नहीं बताते, 2-3 दिन बाद बताते हैं और कम तनखा के कारण जो नौकरी छोड़ जाते हैं उन्हें 2-3 दिन किये काम के पैसे नहीं देते।"

इम्पीरियल ऑटो मजदूर : "प्लॉट 94 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 200 स्थाई और ठेकेदारों के जरिये रखे 1000 वरकर काम करते हैं। दो शिफ्ट हैं 11½-11½ घण्टे की। ओवर टाइम के पैसे स्थाई मजदूरों को 15 रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से और ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों को 8½ रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से।"

पंजाब रोलिंग मिल वरकर : "प्लॉट 149-50 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में प्रवेश का समय सुबह 8 बजे निश्चित है लेकिन फैक्ट्री से निकलने का कोई समय तय नहीं है। फैक्ट्री में बहुत गर्म काम है और जबरन रात 10-11 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट। फैक्ट्री में काम करते 300 मजदूरों में से 8-10 ही कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और बाकी सब को 10-12 ठेकेदारों के जरिये रखा है। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 2400-2500 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं – कम्पनी एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती और प्रायवेट में इलाज करवाती है।"

अम्बिका मजदूर : "प्लॉट 30/3 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1900 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ड्युटी 12 घण्टे की – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। बोर्ड पर तनखा 7 तारीख से पहले लिख रखा है पर देते 20 तारीख के बाद हैं। साप्ताहिक छुट्टी के दिन जबरन ड्युटी। पचास मजदूरों में 4 महिलायें और 5 बच्चे भी हैं। फैक्ट्री में लैट्रीन-बाथरूम नहीं हैं और जिस दिन टैंकर नहीं आता उस दिन पीने का पानी भी नहीं। फर्स्ट एड का सामान नहीं – चोट लगने पर बाहर इलाज। यहाँ व्हर्लपूल फ्रिज की ट्रे बनती हैं।"

ओरियन्ट फैन वरकर : "प्लॉट 11 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 50-60 स्थाई मजदूर, 100 कैजुअल वरकर और 4 ठेकेदारों के जरिये रखे हम 150 मजदूर काम करते हैं। हम में 20 के ही जॉब कार्ड और ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं – 130 के जॉब कार्ड नहीं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। हम में हैल्पर को 8 घण्टे के 80 रुपये। स्थाई व कैजुअल को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से पर हमें सिंगल रेट से। वेतन भी देरी से – हमें अप्रैल की तनखा 16 मई को दी।"

नीलकंठ थर्मोकोल मजदूर : "प्लॉट 37 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1700 रुपये और ऑपरेटर की 2000 रुपये। एक शिफ्ट 12 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा 18 तारीख बाद – अप्रैल का वेतन आज 11 मई तक नहीं दिया है। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर इधर जिन 6 पुराने मजदूरों को निकाला है उनके पी.एफ. निकालने के फार्म कम्पनी भर नहीं रही।"

एस्कोर्ट्स वरकर : " थर्ड प्लान्ट में एक शिफ्ट में जब 90 ट्रैक्टर बनते हैं तब लाइन पर कैजुअल वरकर ही होते हैं – स्थाई मजदूर साइड असेम्बली में होते हैं। लाइन पर बँधे होते हैं, हिल नहीं सकते। साइड असेम्बली में भी काम ज्यादा होता है पर समय आगे-पीछे कर सकते हैं। थर्ड प्लान्ट में 1994 में 2 शिफ्ट में 77 ट्रैक्टर बनते थे, आज एक शिफ्ट में ही 90 और दो शिफ्ट में 180 ट्रैक्टर बनते हैं जबकि स्थाई मजदूर आधे से भी कम रह गये हैं। जरूरत पर कम्पनी कैजुअल वरकर भर लेती है – स्थाई मजदूर की तनखा 14 हजार रुपये से ज्यादा है और कैजुअल वरकर की इसका पाँचवा हिस्सा।"

मनीष विनायल मजदूर : "प्लॉट 67 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में बहुत-ही ज्यादा गर्मी का काम है और 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में 200 वरकर काम करते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 10-12 की ही हैं। पीने के पानी की भारी समस्या – बाहर से बोतल में मजदूर पानी लाते हैं। मात्र एक लैट्रीन 200 के लिये। तनखा देरी से और किस्तों में तथा ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 84 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में दो हजार से ज्यादा मजदूर काम करते हैं। फिनिशिंग विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और बाकी विभागों में 14-15 घण्टे की एक शिफ्ट। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कैजुअल वरकरों में हैल्परों की तनखा 2554 रुपये। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 1800 रुपये। कैजुअलों को अप्रैल की तनखा 16 मई को दी और स्टाफ कहे जाते स्थाई मजदूरों की तनखा 20 मई के बाद।"

शशि सर्विस मजदूर : " प्लॉट 5 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1500-1700 रुपये। एक शिफ्ट है 12 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। एक ठेकेदार के जरिये 8 महिला मजदूर भी रखी हैं। तीस मजदूरों में 7 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। फैक्ट्री में ओरियन्ट पँखों के पुर्जे बनते हैं।"

अल्पाइन एपरेल्स वरकर : "प्लॉट 19 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 9 से साँय 5½ की है पर रात 12-1 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

कानून हैं शोषण के लिये छूट है कानून से परे शोषण की

स्तुति मैटल, 6 इन्ड. एरिया, हैल्पर की तनखा 1800 रुपये; ***भूपेन्द्रा स्टील,*** 25 सै-6, हैल्परों को 8 घण्टे के 65-70 रुपये और ऑपरेटरों को 70-80 रुपये, 400 मजदूरों में सिर्फ 30 स्थाई; ***वीनस मैटल,*** 10 सै-25, हैल्परों की तनखा 1800-2200 रुपये; ***शिवालिक ग्लोबल,*** 12/6 मथुरा रोड़, अप्रैल की तनखा 17 मई को देनी शुरू की; ***डी.एस. बुहिन,*** 58 इन्ड. एरिया, हैल्परों की तनखा 1800-2000 रुपये, 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम; ***पी आई सी एल,*** 99 सै-6, ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2200-2300 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ड्युटी 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से; ***नूकेम प्लास्टिक,*** 54 इन्ड. एरिया, मार्च की तनखा 1 मई को और अप्रैल की 11 मई तक नहीं; ***सुपर ऑटो,*** 84 सै-6, ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 1800-2000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं; ***अनमोल ऑटो,*** 23 बी/17 इन्ड. एरिया, हैल्पर की तनखा 2200 रुपये, तीसों दिन 12 घण्टे ड्युटी, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से; ***कॉन्टिनेन्टल प्रोफाइल्स,*** 10 सै-6, हैल्परों को 8 घण्टे के 80-90 रुपये, ड्युटी 12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से; ***ग्लोब कैपेसिटर,*** 30/8 इन्ड. एरिया, हैल्पर को 8 घण्टे के 88 रुपये, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं;

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये–पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

प्रतिदिन 8 घण्टे काम और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी पर 01.04.2007 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3510 रुपये; अर्धकुशल अ 3640 रुपये; अर्धकुशल ब 3770 रुपये; कुशल श्रमिक अ 3900 रुपये; कुशल श्रमिक ब 4030 रुपये; उच्च कुशल मजदूर 4160 रुपये। सामान्य स्टाफ में दसवीं से कम 3640 रुपये; 14वीं से कम 3900 रुपये; स्नातक 4160 रुपये; हलका वाहन चालक 3900 रुपये; भारी वाहन चालक 4160 रुपये; सुरक्षा गार्ड बिना हथियार 3640 रुपये। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है। वैसे इन तनखाओं में मजदूर अपने बच्चों के ढँग का पाव-पाव दूध और माता-पिता को ढँग की दाल नहीं खिला सकते।

एक छोटा-सा कदम : अगर आपको ऊपर दर्शाये न्यूनतम वेतन नहीं दिये जा रहे तो कम्पनी-फैक्ट्री-कार्यस्थल का पता देते हुये इन साहबों को पत्र भेजें:

1. श्रीमान उप श्रम आयुक्त
   श्रम विभाग कार्यालय
   पुरना ए डी सी दफ्तर, सैक्टर-15ए
   फरीदाबाद – 121007
2. श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार
   30 वेज बिल्डिंग
   सैक्टर-17
   चण्डीगढ
3. श्रीमान श्रम मन्त्री,
   हरियाणा सरकार
   हरियाणा सचिवालय
   चण्डीगढ
4. श्रीमान मुख्य मन्त्री,
   हरियाणा सरकार
   हरियाणा सचिवालय
   चण्डीगढ

लखानी रबड़ उद्योग

लखानी रबड़ उद्योग मजदूर : "प्लॉट 131 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में अनेक प्रकार की और विभिन्न नाप की 70 हजार जोड़ी चप्पल प्रतिदिन बनती हैं। मोल्डिंग विभाग में 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं। डिब्बे बनाने वालों की 12½ घण्टे की एक शिफ्ट है। हवाई चप्पल बनाती 16 लाइनों पर सुबह 8 से रात 10½-11 बजे तक की एक शिफ्ट है। स्थाई व कैजुअलों को ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से – मार्च के ओवर टाइम के पैसे 25 मई को जा कर दिये, अप्रैल के आज 31 मई तक नहीं दिये हैं। कम्पनी 15 घण्टे में भी एक कप चाय तक नहीं देती।

" लखानी रबड़ में कम्पनी ने 4 ठेकेदारों के जरिये 60 मजदूर रखे हैं। मोल्डिंग विभाग से लाइनों पर शीटें पहुँचाते 16 मजदूरों की ड्युटी सुबह 8 से रात 9 बजे तक, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, कार्ड नहीं – हाजिरी नहीं लगती। चप्पलों से भरे बड़े डिब्बे बगल के प्लॉट स्थित गोदाम में पहुँचाते 20 मजदूरों की ड्युटी सुबह 8 से रात 10 बजे तक, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, कार्ड नहीं – हाजिरी नहीं लगती। पाउडर, प्लास्टिक दाना, रबड़ की 5-6 बड़ी गाड़ी रोज फैक्ट्री में आतीं हैं और इन्हें खाली करते 13 मजदूरों की ड्युटी सुबह 8 से रात 8 बजे तक, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, कार्ड नहीं – हाजिरी नहीं लगती। सब को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। सिर्फ 10 सफाई कर्मियों की 8-8 घण्टे ड्युटी, ई.एस.आई., पी.एफ., कार्ड हैं – हाजिरी लगती है। डिब्बे वाले प्लान्ट में बिना किसी ठेकेदार के भी ठेकेदार के जरिये रखे वरकर हैं.... चप्पलों के फीते बाहर से कट कर आते हैं।

"लखानी रबड़ में 250 स्थाई और 250 कैजुअल वरकर हैं। स्थाई और कैजुअलों की तनखा में 200 रुपये का फर्क था – अप्रैल की तनखा में स्थाई मजदूरों के 200 रुपये और बढा दिये। कैजुअलों का 6 महीने में ब्रेक करते हैं पर ऐसे कैजुअल भी हैं जो महीने-भर के दिखाये ब्रेक के दौरान भी फैक्ट्री में काम करते रहते हैं (उन्हें उस दौरान की पूरी तनखा दी जाती है – ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि नहीं काटी जाती)।

"मोल्डिंग विभाग में तो पूरा काम ही गन्दा है – पाउडर उड़ता है, रबड़ पकती है। लाइनों पर चप्पल में सुराख करने वाला काम भी गन्दा है। गर्मियों में तो मोल्डिंग में बहुत ही बुरा हाल हो जाता है – साँस की तकलीफें और टी.बी. काफी लोगों को हैं। फैक्ट्री में हाथ कटते हैं – एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भर कर ई.एस.आई. भेज देते हैं।

"लखानी रबड़ में 50 हजार रुपये से ज्यादा तनखा लेने वाले 3 बड़े लोग सुबह 7 से रात 10 बजे तक फैक्ट्री में रहते हैं। अधिकतर सुपरवाइजर-मैनेजर सुबह 8 से साँय 6 तक और परचेज वाले रात 8-9 बजे तक फैक्ट्री में रहते हैं। स्टाफ वालों में दफ्तर वाले 30 लागों की ही सुबह 9 से साँय 5 तक की ड्युटी है।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी
फरीदाबाद–121001

कुछ बातें गुड़गाँव से .....

(पेज एक का शेष)

कम्पनी ने फिर वही वी आर एस पेश की और यूनियन प्रधान ने पहल कर बड़ी सँख्या में मजदूरों से इस्तीफे लिखवाये। हम नादान थे, कईयों ने तो देखा-देखी में नौकरी छोड़ दी। फिर भी इतने मजदूर नहीं गये जितने कम्पनी चाहती थी। सन् 2003 में ही कम्पनी ने तीसरी बार वही वी आर एस लगाई। इस प्रकार स्थाई मजदूरों की सँख्या 750 से 250 कर दी गई और उत्पादन कार्य में कम्पनी ने ठेकेदारों के जरिये वरकर रखने शुरू किये।

"2007 के आरम्भ में डेल्फी कम्पनी की इस फैक्ट्री में 4 ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की सँख्या 2500 हो गई। स्थाई मजदूरों की 8-10 हजार रुपये तनखा की तुलना में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों का वेतन 2700 रुपये। फरवरी 07 के आरम्भ में एक दिन अचानक चार ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर फैक्ट्री में प्रवेश करने की बजाय फैक्ट्री के बाहर बैठ गये और तनखा बढाने को कहा। हम ढाई सौ स्थाई मजदूर यूनियन में हैं और हम फैक्ट्री में गये तथा हम ने काम किया। मजदूरों के दसवें हिस्से से, हम 250 स्थाई मजदूरों से उत्पादन क्या खाक होना था। ठेकेदारों के जरिये रखे ढाई हजार मजदूरों की चाणचक्क हड़ताल से कम्पनी हड़बड़ा गई। कम्पनी ने अन्य कम्पनियों से होड़, फैक्ट्री बन्द करने, फैक्ट्री अन्यत्र ले जाने की बातें की और यूनियन से हड़ताल फौरन खत्म करवाने को कहा। यूनियन लीडरों ने कहा कि हम ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के साथ भी हैं और कम्पनी के साथ भी। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर नये-नये लड़के हैं फिर भी दो दिन बाद मुश्किल से माने। दो दिन उत्पादन ठप्प रहने के बाद यूनियन उन सब को फैक्ट्री में लाई। इधर हम स्थाई मजदूरों में पुणे ट्रान्सफर की बातों ने छँटनी का डर फिर पैदा कर दिया है।"

(1978 में जनरल मोटर की अमरीका स्थित फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य में 4 लाख 66 हजार स्थाई मजदूर थे। कहावत बन गई थी कि जनरल मोटर कम्पनी को छींक आती है तो अमरीका सरकार को जुकाम हो जाता है। इस सब में काफी कुछ बदला है। स्थाई नौकरी और बड़ी सँख्या के कारण जनरल मोटर के मजदूरों की तनखा औरों से कुछ अधिक थी, उन से अमरीका में पार्ट्स सप्लायर कम्पनियों के वरकरों की तनखा 1980 में 15% कम थी (सन् 2000 में यह 31% कम)। पार्ट्स के लिये जनरल मोटर ने अपने में से डेल्फी नाम से कम्पनी खड़ी की – 1999 तक डेल्फी जनरल मोटर कम्पनी का ही हिस्सा थी।

अमरीका में जनरल मोटर की फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य में स्थाई मजदूरों की सँख्या 1993 में 2 लाख 33 हजार कर जून 06 में यह 70 हजार कर दी गई। डेल्फी कम्पनी ने अक्टूबर 05 में स्वयं को दिवालिया घोषित कर अमरीका स्थित अपनी फैक्ट्रियों में मजदूरों के वेतन आधे से भी कम किये, छुट्टियाँ कम की, स्वास्थ्य तथा सेवानिवृति की स्थितियाँ बदतर की। जनरल मोटर-डेल्फी ने अमरीका में यह सब करने के लिये यूनियन को एक औजार बनाया है।

अमरीका में दिवालिया के प्रावधान और यूनियन को इस्तेमाल करती डेल्फी कम्पनी की 2005 में दुनियाँ-भर में 160 फैक्ट्रियों में एक लाख 80 हजार मजदूर काम करते थे। डेल्फी की अमरीका में 33 फैक्ट्रियाँ, मेक्सिको में, मोरोक्को में, स्पेन में, भारत में, चीन में.... हर जगह कानून अनुसार शोषण के संग-संग कानून से परे शोषण भी – चीन में शंघाई नगर स्थित डेल्फी फैक्ट्री में मजदूर की तनखा 13 हजार रुपये, मोरोक्को में कानून सप्ताह में 44 घण्टे काम का और 4200 मजदूरों (3 हजार महिला मजदूर) वाली डेल्फी फैक्ट्री में हफ्ते में 72 घण्टे काम....)

मारुति कार मजदूर : " संजय गाँधी की छोटी कार योजना नहीं चली तो कम्पनी का सरकारीकरण कर सरकार ने

कुछ बातें गुड़गाँव से

सुजुकी कम्पनी को हिस्सेदार बनाया और दिसम्बर 83 में फैक्ट्री से पहली कार निकली। पाँच किलोमीटर घेरे में फैले क्षेत्र में अब मारुति के तीन प्लान्टों के संग सहायक इकाइयाँ हैं और इधर मानेसर में इससे भी बड़े क्षेत्र में मारुति की नई फैक्ट्री शुरू कर दी गई है। आज प्रतिदिन 2200 मारुति गाड़ियाँ बन रही हैं और इस सँख्या में नई फैक्ट्री भारी इजाफा करेगी।

" मारुति उद्योग में 1983 में भारत सरकार का हिस्सा 76% और सुजुकी कम्पनी का 24% था। कार चल निकली तो 1987 में हिस्सेदारी 60 व 40 की गई और 1992 में आधी-आधी। सुजुकी कम्पनी का हिस्सा 54 प्रतिशत होने के साथ 1998 से उसका मारुति कम्पनी पर पूर्ण-सा नियन्त्रण हो गया।

" संचालन के लिये 1983 में सरकार ने बी एच ई एल के एक बड़े साहब को मारुति उद्योग का चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर बनाया था। यह साहब अपने साथ प्रमुख अधिकारियों के संग इन्टक के एक यूनियन लीडर को भी लाया था। फैक्ट्री हरियाणा में स्थित है पर दिल्ली से 1983 में यूनियन का पंजीकरण करवाया गया और भर्ती-पत्र के साथ कम्पनी यूनियन की सदस्यता भी देती थी। यूनियन लीडर बड़े साहब के साथ अपने सीधे सम्बन्धों के कारण छोटे साहबों को भाव नहीं देता था, हड़का भी देता था। मैनेजरों ने विरोध में गुपचुप कुछ मजदूरों को नेताओं के तौर पर तैयार किया और 1986 में एच एम एस यूनियन के साथ 99 प्रतिशत मजदूर ! चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर बदला और नये बड़े साहब के नेतृत्व में मैनेजमेन्ट ने कुछ नये लीडरों को एच एम एस से इन्टक में कर यूनियन चुनाव करवाये। पहले वाले साहब से जुड़े इन्टक लीडर की जगह नये लोग लीडर चुने गये और उन्होंने फिर इन्टक से नाता तोड़ कर हरियाणा सरकार से एक स्वतन्त्र यूनियन का पंजीकरण करवाया। नई हरियाणा सरकार से जुड़ी एल एम एस यूनियन ने 1987 में मारुति कम्पनी में हाथ-पैर मारे पर चली नहीं....

" मारुति कम्पनी ने 1983 में अनुभवी मजदूरों की स्थाई भर्ती आरम्भ की थी। शुरू में सब-कुछ सुजुकी कम्पनी की जापान में फैक्ट्रियों से आता था और गुड़गाँव में उन्हें सिर्फ जोड़ा जाता था। कार के हिस्सों का यहाँ उत्पादन बढा और 1992 में मारुति फैक्ट्री में 4500 स्थाई मजदूर तथा 2000 विभिन्न प्रकार के स्टाफ के लोग हो गये। उत्पादन बढता गया है, कार के अधिकतर हिस्से भारत में ही बनने लगे हैं पर 1992 के बाद मारुति फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों की भर्ती बन्द-सी है। बाहर काम करवाना बढा। लेकिन मारुति फैक्ट्री में उत्पादन से सीधे जुड़े काम में 1997 तक स्थाई मजदूर ही थे, ठेकेदारों के जरिये रखे कोई वरकर नहीं थे।

" मारुति फैक्ट्री में मजदूरों और साहबों की एक जैसी वर्दी, एक जैसा भोजन, बसों में साथ-साथ बैठना.... सब का 15 मिनट पहले पहुँचना और शिफ्ट शुरू होने से पहले 5 मिनट सब द्वारा व्यायाम.... सुजुकी कम्पनी के प्रभाव वाली इस समानता ने आरम्भ में हम मजदूरों को बहुत प्रभावित किया और हम लोगों ने इसे स्वीकार किया। लेकिन शीघ्र ही अनुभवों ने हमें बताया कि यह समानता दिखावे की समानता है।

..... (पेज तीन का शेष)

कम्पनी की इस-उस बात का मजदूर विरोध करने लगे। आरम्भ में इन्टक-एच एम एस-स्वतन्त्र यूनियन के मैनेजमेन्ट वाले लीडरों के जरिये हम ने कम्पनी का विरोध किया। फिर 1994 में एक किस्म के मैनेजमेन्ट-विरोधी लोग यूनियन चुनाव जीते और आगे के चुनाव भी जीतते गये। कम्पनी के हित और मजदूरों के हित, दोनों के हित की बात करने वाले इन यूनियन नेताओं से एक कम्पनी चेयरमैन ने समझौता किया तो उसकी जगह चेयरमैन बने दूसरे साहब ने वह रद्द कर दिया। मारुति मैनेजमेन्ट ने 1997 में उत्पादन से सीधे जुड़े कार्यों में भी ठेकेदारों के जरिये वरकर रखना शुरू कर दिया। फिर उकसाने वाली एक के बाद दूसरी हरकत कर कम्पनी ने सन् 2000 में हड़ताल करवाई....

"मारुति फैक्ट्री में हड़ताल। स्थाई मजदूरों की हड़ताल और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों द्वारा फैक्ट्री में काम। दिल्ली में रात-दिन कई रोज स्थाई मजदूरों का परिवारों समेत जमघट। भाँति-भाँति के संगठनों का समर्थन। बड़ी-बड़ी यूनियनों के बड़े-बड़े लीडरों के भाषण। संसद सदस्यों के भाषण। पूर्व-प्रधान मन्त्री का भाषण। भारत सरकार द्वारा हस्तक्षेप और सरकारी रेडियो-टी वी पर समझौते की घोषणा। मारुति-सुजुकी कम्पनी द्वारा समझौते की बात से इनकार और भारत सरकार द्वारा असमर्थता व्यक्त। कितना कुछ नहीं देखा हम ने उस दौरान।

" अक्टूबर-दिसम्बर 2000 में स्थाई मजदूरों से हड़ताल करवा कर तथा हड़ताल कुचल कर मारुति कम्पनी ने स्थाई मजदूरों को नरम किया और फिर सन् 2001 में पहली वी आर एस लागू कर 1250 स्थाई मजदूरों की छँटनी की। इस स्वैच्छिक कही जाती योजना को जबरन मजदूरों पर थोपा गया। फैक्ट्री में जबरदस्ती के संग घर-घर जा कर भी इस्तीफे लिखवाये गये। घर में जबरन इस्तीफा लिखवाने की फिल्म तक सबूत के तौर पर मजदूरों ने न्यायालय में पेश की और न्यायालय 6 साल से विचार कर रहा है ! सन् 2003 में फिर वी आर एस के जरिये मारुति फैक्ट्री से 1250 स्थाई मजदूरों की छँटनी की गई। ढाई हजार स्थाई मजदूरों के नौकरी से निकाल कर कम्पनी ने उत्पादन कार्य में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की सँख्या में भारी वृद्धि की है। आज मारुति कार की पहली फैक्ट्री में 1800 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 4000 वरकर उत्पादन कार्य में हैं। स्थाई मजदूर की तनखा 25 हजार रुपये और वही काम करते ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को इसका पाँचवाँ-सातवाँ हिस्सा।" *(कैसे, मारुति कार का अधिकतर काम बाहर करवाया जाता है, फरीदाबाद-गुड़गाँव-ओखला-नोएडा में हजारों जगह करवाया जाता है। बहुत जगहों पर वहाँ की सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जाता। ऐसे मजदूरों की सँख्या भी कम नहीं है जिन्हें न्यूनतम वेतन का आधा भी नहीं दिया जाता, 800-1000 रुपये तनखा में मारुति कार का काम करवाया जा रहा है।)*

क्या फर्क है पड़ता ?

जब तक हम
गुलाम हैं या
बँधवा किसान
या फिर उजरती मजदूरी के गुलाम
चाहे हम बाखुशी या बेदिली से
कर दें कुर्बान
अपनी जिन्दगी के
सबसे खूबसूरत साल
काम की वेदी पर
मैं पूछता हूँ अपने अर्थशास्त्री और
राजनीतिविज्ञान के दोस्तों से
क्या फर्क पड़ेगा
चाहे हम
ज्यादा करें पैदा और खर्च भी ज्यादा ?
कम करें पैदा और खर्च भी कम ?
चाहे हम ज्यादा कुशलता से उत्पादन
बढायें और आपस में बराबर बाँटें ?
या अक्षम हो कर उसे बाँटें असमान ?

जब तक हम
गुलाम हैं या
बँधवा किसान
या उजरती मजदूरी के गुलाम
चाहें हम बाखुशी या बेदिली से
चढायें अपनी जिन्दगी के
सबसे सुन्दर साल
काम की वेदी पर
मैं पूछता हूँ अपने समाजशास्त्री और
इतिहासकार दोस्तों से
क्या फर्क पड़ेगा
हमारे काम के पिरामिड
कम्पनियाँ, देश, परिवार या पहचानें
ज्यादा शान्तिपूर्वक और प्रेम से
आपस में मिलें-जुलें
या फिर खून की नदियों से हो कर

"समय बतायेगा सबकुछ !"
कहते हैं वे
माफ करना, यार
समय कुछ नहीं बतायेगा

जब तक हम
गुलाम हैं या
बँधवा किसान
या उजरती मजदूरी के गुलाम
चाहे बाखुशी या बेदिली से
डूबे रहें अपने वजूद के
सबसे सक्रिय सालों के
बिकने की शर्तों की फिक्र में
मैं पूछता हूँ अपने साहित्यकार और
वैज्ञानिक दोस्तों से
क्या फर्क है पड़ता
चाहे हम अपनी अभी की जिन्दगी
को भविष्य के ऐतिहासिक उपन्यास के
रूप में जियें और देखें
या अतीत की
अपने सामने आकार लेती
वैज्ञानिक-फन्तासी के
रूप में।

— गंगादीन लोहार

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73